पाठ 20

एक संसद नदी की

(प्रस्तुत 'रिपोर्ताज' दैनिक समाचार पत्र 'हिन्दुस्तान' से साभार लिया गया है। इसमें मैग्सेसे सम्मान प्राप्त राजेन्द्र सिंह द्वारा राजस्थान के अलवर जिले में जल-प्रबन्धन द्वारा जल-संचयन एवं जल - क्रान्ति का वर्णन किया गया है)

सूखी धरती में पानी लौट आया। सिर्फ पानी ही नहीं लौटा। उसके साथ लौट आयी नंगे पहाड़ों पर हरियाली और जीवन में खुशहाली। बरसों से सूखी नदियाँ न सिर्फ सरस हो गयीं, बल्कि मछलियों व अन्य छोटे-छोटे जल-जीवों की क्रीड़ा शुरू हो गयी। जगह-जगह पानी का जमा होना, कुओं का फिर से चढ़ जाना और हरे-भरे होते जा रहे खेतों में पानी फेंकती मशीनें देखकर सहसा यकीन करना मुश्किल हो जाता है कि क्या यह वही धरती है जो हर साल 'मौसम आते ही' अकाल और सूखे की चपेट में आ जाती है !

राजस्थान की धरती पर हुई यह जलक्रान्ति एक-दो नहीं करीब पन्द्रह सालों के कड़े संघर्ष और समाज की अथक मेहनत का नतीजा है। इस जल क्रान्ति को संभव बनाने में केन्द्रीय भूमिका रही राजेन्द्र सिंह की। इनके प्रयासों की सुखद और अनूठी मिसाल हैं- वे पाँच नदियाँ। जो दो दशक पहले सूख गयी थीं पर अब सदानीरा हो गयी हैं। पारम्परिक तरीके से जल-प्रबन्धन का अद्भुत उदाहरण पेश करती इन नदियों ने कितने ही गाँवों की तस्वीर

बदलकर रख दी हैं। अखरी, रुपारेल, सरसा, भगाणी और जहाज वाली नदी में फिर से बहता पानी इन गाँवों के लोगों के जुझारू चरित्र का अद्भुत प्रमाण है। अलवर जिले में अपनी मेहनत से सूखी नदियों को फिर से पानीदार बनाने वाले गाँव के मेहनतकश लोगांे ने इन्हंे अपनी सम्पत्ति मान लिया है।

एक दिलचस्प बात यह है कि अखरी नदी को जिलाने वाले लोगों ने तो इसके संरक्षण के लिए अखरी संसद का गठन कर लिया है। अखरी संसद के कई अधिवेशन भी हो चुके हैं। इन बैठकों में लगभग 75 गाँवों के लोग हिस्सेदारी करते हैं। अखरी संसद में पानी के उपयोग के उचित कानून बनते हैं। इन पर सख्ती और बगैर किसी कोताही के अमल भी होता है। एक नियम के अनुसार यदि कोई बाहरी व्यक्ति मछली मारते पकड़ा गया तो उस पर 11 से 1100 रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। इस नदी पर किसी सरकार का नहीं, अखरी संसद का कानून चलता है। इस समय अखरी संसद के सौ से ऊपर सदस्य हैं।

जब अखरी सहित अन्य नदियाँ सूख चुकी थीं तो इन्हें पुनर्जीवित करने के लिए प्रशासन ने कोई ध्यान नहीं दिया। पर जब लोगों की लगन और मेहनत से इनमें पानी बहने लगा तो स्थानीय प्रशासन ने इन पर नजरें टिका लीं। एक ठेकेदार को अखरी में मछली मारने का ठेका दे दिया गया। पर वह ठेकेदार अपने दल के साथ हमीरपुर गाँव पहँुचा तो गाँव वालों ने पूरी एकता से उसका विरोध किया। ठेकेदार को तब गाँव वालों ने अपनी संसद के बारे में बताया और साथ ही गिना दिया नियम भी। ठेकेदार के पास चुपचाप चले जाने के अलावा कोई रास्ता नहीं था।

दुःख और कमजोरी में समाज का साथ देने के विचार से राजेन्द्र सिंह अक्टूबर 85 में राजस्थान के अलवर जिले के किशोरी गाँव में पहुँचे थे। वे समाज को शिक्षित करना चाहते थे। यहाँ आकर उनका शिक्षा के पूर्वाग्रहों का किला टूट गया। गाँव के बुजुर्गों ने उन्हें एक बड़ी नेक सलाह दी। सलाह थी पढ़ाई से पहले पानी। सूखे से बरसों से जूझ रहे उन बूढ़े लोगों के ज्ञान और समाज की दशा को देखकर राजेन्द्र सिंह को ये बात जँच गयी। उन्हें लगा इस समाज को वाकई पढ़ाई से पहले पानी की जरूरत है। अपने साथियों के साथ तब उन्होंने पानी बचाने और बढ़ाने का काम करने का मन बना लिया।

अब सवाल था कि आखिर यह सब होगा कैसे? इसके लिए राजेन्द्र सिंह को किशोरी और गोपालपुरा गाँव के उन्हीं पुराने और अनुभवी लोगों की मदद लेनी पड़ी। गाँव के लोगों ने उन्हें पारम्परिक जल प्रबन्धन की पुरानी विधियों की विस्तार से जानकारी दी। मशविरा

सीधा-सा था। छोटे-छोटे बाँध बनाये जाएँ। सूख चुके कुएँ-बावड़ियों को गहराकर उन्हें फिर से जीवित किया जाय। इसके साथ ही जोहड़ बनाये जाएँ। नदियों को जिलाया जाए इत्यादि। सीधा गणित बरसाती पानी के प्रबन्धन का था। प्रबन्ध इस तरह से कि बारिश का पानी बहकर बेकार न जाय। उस पानी को छोटे-छोटे बाँध और एनी कट बनाकर रोक लिया जाय। जब पानी रुकेगा तो वहीं धरती में समा जायेगा। इससे धरती के नीचे पानी सुरक्षित भी रहेगा और वह अन्दर ही अन्दर ढलान या नीचे की तरफ रिसता रहेगा। जब जमीन के अन्दर पानी बना रहेगा और

धीरे-धीरे आगे या नीचे की ओर बढ़ेगा तो आस-पास के कुओं का जलस्तर उठेगा। सूखी धरती को पानी मिलने से हरियाली होगी और खेती भी की जा सकेगी। बस, यही था जल-प्रबन्धन का पूरा शास्त्र, जो गाँव के लोगों ने समझाया।

बकौल राजेन्द्र सिंह तब हमें यकीन आने लगा कि यदि ऐसा हो सका तो ग्रामीण समाज की दशा-दिशा और हालात में जबरदस्त परिवर्तन आ सकता है। ग्रामीण जीवन के आधार कृषि और पशु ही तो हैं। दोनों होंगे और बचे रहेंगे तो लोगों का जीवन भी टूटने और बिखरने से बच जायेगा। गाँव के लोगों ने यह भी समझाया कि जिस समाज में रहकर काम करना है, सीखना भी वहीं से होगा। दूसरे, करना भी वही होगा जो समाज चाहता है। फैसला भी समाज का और मेहनत भी। आपको सिर्फ समाज का साथ देना है। उसे परम्पराओं का स्मरण कराना है। कुल मिलाकर हालात से हारे लोगों की निराशा दूर करनी है, ताकि वे इस काम को आत्मविश्वास से करें। इस के लिए पहले लोगों का मन बनाना होगा। उन्हें काम, काम के तरीके और इससे मिलने वाले लाभ के बारे में समझाना पड़ेगा।

बहरहाल, काम की शुरुआत गोपालपुरा गाँव के चबूतरे वाले जोहड़ से हुई। इसके लिए लोगों से चन्दा इकट्ठा किया और उन्हें श्रमदान के लिए भी राजी किया। गाँव के कुछ उत्साही लोग गैंती-फावड़े लेकर जुट गये। चूँकि गोपालपुर में उस समय ज्यादा लोग नहीं थे, इसलिए सिलीबावड़ी के लोगों से मशक्कत करायी गयी। हाँ, देखरेख का जिम्मा

गोपालपुरा के लोगों ने ही सँभाला। इस तरह गोपालपुरा में चैतरे वाला जोहड़ और मेवालों वाला बँाध बनकर तैयार हो गया। लोगों को अब बस बरसात का इन्तजार था। लम्बे इन्तजार के बाद पानी गिरा और जोहड़ पानी से भर गया। मेहनत से बनाए जोहड़ में पानी देखकर गाँव के लोग पुलकित थे। पानी से लबालब चैतरे वाले जोहड़ ने लोगों का विश्वास पक्का कर दिया कि अगर इस सिलसिले को आगे बढ़ाया जाय तो सुखद परिणाम जरूर निकलेंगे। इस तरह अभिक्रम शुरू हुआ एक के बाद एक तालाब और जोहड़ बनाने का।

इतना बड़ा काम हुआ तो उसकी चर्चा होनी ही थी। दूसरे गाँवों के लोग भी गोपालपुरा में पानी का प्रबन्धन देखने आने लगे। उन्हें भी लगा कि जब इस गाँव के लोग अपनी मेहनत के दम पर ऐसा चमत्कार कर सकते हैं तो वे क्यों नहीं? फिर तो गाँव के गाँव इस काम में जुट गये। राजेन्द्र सिंह ने बाकायदा संस्था बनाकर इस मुहिम को आगे बढ़ाना शुरू किया। काम का तरीका यह था कि जिस बाँध, तालाब या जोहड़ बनाने में जो खर्च आयेगा उसका दो तिहाई संस्था वहन करेगी और बाकी स्थानीय लोगों से जमा किया जायेगा। ऐसा इसलिए कि जब लोगों का पैसा लगेगा तो उसका उस काम से स्वाभाविक रूप से जुड़ाव होगा। फिर श्रम भी तो स्थानीय लोगों को ही करना था। इस तरह लोग इस काम और संस्था से जुड़ते चले गये। संस्था के लोगों ने अपने काम को फैलाने के लिए गाँव-गाँव पैदल यात्राएँ शुरू कर दीं। इन यात्राओं का लाभ यह हुआ कि लोग जल के साथ जंगल का महत्त्व भी समझने लगे।

करीब 15 साल पहले शुरू हुआ छोटा सा प्रयास एक मुहिम बनकर अलवर सहित राजस्थान के दोसा, जयपुर, टोब, उदयपुर, करौली और सवाई माधोपुर जिलों में भी फैल चुका है। इन जिलों के सैकड़ों गाँवों में इन दिनों पानी बचाने, बढ़ाने का काम चल रहा है। राजस्थान के जिन इलाकों में पारम्परिक तरीके से जल-प्रबंधन का काम हुआ है, वहाँ की तस्वीर पूरी तरह से बदल गयी है।

भू-जल स्तर उठने से कुएँ जी उठे हैं। 'डार्क जोन' 'ह्वाइट जोन' में तब्दील हो गये हैं। हरियाली वापस आ गयी है। धरती की उर्वरा शक्ति भी लौट आयी है। फसल-चक्र भी बदल गया है। अरावली की नंगी पहाड़ियों पर फिर से पेड़-पौधे उगने लगे हैं।

वतन छोड़कर रोजी-रोटी की तलाश में पलायन कर गये, गाँव के लोग वापस आने लगे हैं। अपने खेतों में भरपूर फसल पैदा कर रहे हैं। पलायन पर विराम लग चुका है। धूप और लू की गर्म लहरें झेलकर पानी के लिए रोज कोसों की यात्रा करने वाली महिलाओं के तो दिन ही फिर गये हैं। अब वे घर का काम निपटाकर घर-परिवार की सोचने लगी हैं और बच्चे जो पहले कुछ या कुछ भी नहीं करते थे, पाठशाला जाने लगे हैं।

बहरहाल जल-संरक्षण का यह अद्भुत काम नीति-निर्धारकों के लिए सबक है और शेष समाज के लिए सीख। आज जबकि हर जगह पानी की किल्लत है, ऐसे में इस तरह का काम निश्चय ही प्रेरक और अनुकरणीय है। राजेन्द्र सिंह भी मानते हैं कि पानी बचाने का यह काम इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि आज भी हमारी परम्पराएँ प्रासंगिक हैं। उनमें समाज को समृद्ध करने के पर्याप्त बिन्दु मौजूद हैं। जल-संरक्षण के व्यापक काम की बदौलत राजेन्द्र सिंह को मिले मैग्सेसे सम्मान ने भी हमारी परम्पराओं की प्रासंगिकता को ही पुष्ट किया है। निःसंदेह इन्हीं परम्पराओं पर विश्वास कर राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और गुजरात में कई जगह जल- संरक्षण का काम चल रहा है।

राजस्थान में अगर परम्पराओं को आधार बनाकर काम किया जा रहा है तो गुजरात में कुछ काम वैज्ञानिक तकनीक की मदद लेकर भी चल रहा है। वैज्ञानिक तकनीक की मदद उस जगह की पहचान करने में ली जाती है, जहाँ पानी इकट्ठा किया जा सकता है। इस तकनीक का नाम है रिमोट सेंसिंग। रिमोट सेंसिंग के माध्यम से धरती के किसी हिस्से के चित्र लिये जाते हैं। उन चित्रों में धरती की आन्तरिक रचना भी स्पष्ट हो जाती है। आन्तरिक रचना जानकर यह अन्दाजा आसानी से लगाया जा सकता है कि अमुक जगह पानी जमा करने के लिए ठीक रहेगी या नहीं। इससे यह भी पता चल जाता है कि जमीन के भीतर पानी किस गति से रिसेगा। रिमोट सेंसिंग तकनीक, पहाड़ी और पठारी इलाकों में ज्यादा कारगर है। नेहरू विश्वविद्यालय में भी इसी तकनीक की मदद से तीन चैक डैम बनाये गये हैं। उल्लेखनीय है कि जल-संरक्षण की अहमियत समझते हुए ही विश्वविद्यालय

ने इसके लिए एक पाठ्यक्रम की भी घोषणा की है। लेकिन विडम्बना यह है कि जल संकट जिस तेजी के साथ गहरा रहा है, उस तेजी के साथ काम नहीं हो पा रहा है। इसलिए कुदरत की अमोल देन जल को बचाने, बढ़ाने के लिए हर एक को जागरूक होकर अपने स्तर पर कुछ न कुछ करना होगा।

शब्दार्थ

सतत् = हमेशा, सर्वदा। **रीते** = खाली। **मेहनतकश** = मेहनत करने वाला, परिश्रमी। **कोताही** = लघुता, कमी। **पूर्वाग्रह** = पहले से बनी बनायी धारणा। **मशविरा** = परामर्श, सलाह। **जोहड़** = जलाशय। **एनीकट** = गड्ढा जिसमें जल संचित हो। **अभिक्रम** = आरम्भ, प्रयत्न। **मुहिम** = कोई बड़ा काम, मेहनत का काम। **डार्क जोन** = जहाँ जल का स्तर नीचे हो, पानी के अभाव वाले क्षेत्र। **ह्वाइट जोन** = जहाँ पानी का स्तर ऊपर हो। **रिमोट सेंसिंग** = इसके माध्यम से धरती के अन्दर का चित्र लिया जाता है।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. अपने जिलाधिकारी को एक पत्र लिखिए-जिसमें अपने क्षेत्र में स्थित एकमात्र तालाब, जो कभी पर्यटन-स्थल था, किन्तु अब उसमें जलकुम्भी तथा गन्दगी भरी है, या सूख गया है, उसकी सफाई हेतु निवेदन किया गया हो।

पत्र लेखन में निम्नांकित प्रारूप की मदद ले सकते हैं।

सेवा में,

जिलाधिकारी,

जिलाधिकारी कार्यालय,

जनपद .....

विषय - .....

महोदय/महोदया,

.....

.....

दिनांक..... प्रार्थी

2. आपने अनुभव किया होगा कि हमें जितनी आवश्यकता होती है, उससे कहीं ज्यादा पानी हम व्यर्थ ही बहा देते हैं। अपने द्वारा एक दिन में खर्च किए गये जल की मात्रा को नीचे दिये गये तालिका में भरंे। यह भी लिखें कि आपने इन कायोंं में कितना अधिक पानी खर्च किया है-

कार्य	खर्च किया गया जल (अनुमानित)	कितने पानी में काम चल सकता था (अनुमानित)	कितना पानी अधिक खर्च किया गया

3. यह पाठ हिन्दी गद्य की 'रिपोर्ताज' विधा के अन्र्तगत "हिन्दुस्तान" समाचार पत्र से लिया गया है। आपके विद्यालय अथवा घर में या पास-पड़ोस से आपको कोई अखबार या पत्रिका जरूर मिल जायेगी, जिसमें इसी प्रकार के कुछ रिपोर्ताज होंगे। उनमें अपने गाँव/ ब्लाक अथवा तहसील से सम्बन्धित रिपोर्ट छाँटकर उनका संकलन कीजिए तथा स्वयं भी किसी विषय पर रिपोर्ट लिखिए।

विचार और कल्पना

(क) ऐसी दस बातें/कारण लिखिए जिससे सिद्ध हो कि "जल ही जीवन है।"

(ख) अपने आस-पास के क्षेत्र में जल को बचाने, बढ़ाने के लिए आप अपने स्तर से क्या-क्या प्रयास कर सकते हैं, लिखिए।

(ग) 'जल-संरक्षण' के सम्बन्ध में दूसरों को जागरूक बनाने के लिए आप क्या उपाय करेंगे?

(घ) 'जल-संरक्षण' से सम्बन्धित एक पोस्टर बनाकर सार्वजनिक स्थान पर लगाएं।

रिपोर्ताज से

1. दो दशक पहले अलवर जिले में जो नदियाँ सूख गयीं थीं, उनके नाम क्या थे ?

2. अक्टूबर सन् 1985 ई0 में राजेन्द्र सिंह राजस्थान के अलवर जिले के किशोरी गाँव में किस उद्देश्य से गये थे?

3. किशोरी और गोपालपुरा गाँव के लोगों ने राजेन्द्र सिंह को जल-प्रबन्धन की कौन-सी पुरानी विधियाँ बतायीं?

4. सूखी धरती में पानी लौटने के साथ और क्या-क्या परिवर्तन हुए?

5. राजेन्द्र सिंह को मैग्सेसे सम्मान क्यों दिया गया?

6. रिमोट संेसिंग तकनीक क्या है, इससे किस क्षेत्र में मदद मिलती है?

भाषा की बात

1. सूखी धरती, सुखद उम्मीद, नंगे पहाड़ में क्रमशः सूखी, सुखद, नंगे शब्द 'विशेषण' हैं। जबकि धरती, उम्मीद और पहाड़ 'विशेष्य' हैं। इस प्रकार के पाँच अन्य विशेषण-विशेष्य को इस पाठ से छाँटकर लिखिए।

2. निम्नलिखित मुहावरांे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए-

पानी लौट आया, चपेट में आना, तस्वीर बदलना, नजरें टिकाना, किला टूटना, दिन फिरना।

3. स्थान शब्द में ‘ईय’ प्रत्यय लगा कर ‘स्थानीय’ शब्द बनता है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में ईय प्रत्यय जोड़कर नया शब्द बनाइए-

कथन, राष्ट्र, जल, आकाश, संसद, वन्दन, पठन।

4. ‘प्रबन्धन’ में ‘प्र’ उपसर्ग है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग और मूल शब्द अलग-अलग कीजिए-

प्रहार, प्रवर, प्रशिक्षण, प्रशासन, प्रगति, प्रबुद्ध।